महेश शर्मा

दूसरी औरत

सुबह के आठ बजते बजते जेल का पुराना केदी जगदिश चाय का तपेला चौंक में रख कर आवाज लगा रहा था बैरक नम्बर एक के कैदी चाय ले जाओ अपनी अपनी। सभी कैदी दोड पडे वैसे भी ठण्ड का मौसम था सभी ठिठुर रहे थे कोने में उदास खडा चम्पालाल भी आगे बढा चाय लेने लाइन में लगे उसकी नजर चाय के तपेले पर पडी चाय के नाम पर काला काला गरम पानी था जिसे लेने को केदियों में धक्कामुक्की मच रही थी। अपने ग्लास में चाय नाम का काला पानी लेकर चम्पालाल मन्दिर के ओटले पर बैठा। चाय का पहला घुंट भरते ही मुंह कडवा हो गया और दिमाग में पिछले चार पांच महीने की सारी बातें घुमने लगी।

पुराने बस स्टेंड पर चम्पालाल का चाय का ठेला हमेशा ग्राहकों से घिरा रहता था चाय जो बढिया बनाता था वो। लोगबाग चाय के साथ उसकी बातों के भी मजे लेते थे। चम्पालाल था भी रसीया दिन भर चाय का ठेला लगाता हंसी मजाक करता। शाम को अपने घर जो वहीं बस स्टेंड के पीछे बना दो कमरों का कच्चा पक्का मकान के रूप में था वहीं ठेला भी खडा कर देता था।

दिन भर की दुकानदारी के बाद देसी दारू का एक अद्धा रोजाना हलक के नीचे उतारता फिर खाना खाके सो जाता। सुबह वापस आठ बजे ठेला लगा के चाय की दुकानदारी शुरू। घर में ओरत रामली और छः साल का मदन । परिवार का खर्चापानी अच्छी तरहे से चल जाता था। पास के गांव में चार बीघा जमीन थी जो बटई से दे रखी थी।

चम्पालाल के जीवन में वैसे तो कुछ भी समस्या नहीं थी यदि थी तो बस एक मन की भटकन और वो ये कि एक ओरत और करना है। रामली है पर जिन्दगी का मजा नही है वो अपने दोस्त नाथु से अक्सर कहता रहता था कि कुछ भी हो एक नातरा (दूसरी शादी)

जरूर करना है।

तो क्या रामली को छोंडेगा ? नाथु पुछता तो चम्पालाल मुस्कराकर कहता भले ही रामली को छोडना पडे पर जिन्दगी के मजे तो लुंगा यार। और बात इतने पर ही आई गई हो जाती।

रामली एक सीधी सादी अनपढ सांवली सी ओरत थी चेहरे पर चेचक के दाग सामान्य सा बदन लिये एक बच्चे की मां होकर भी काफी ढली हुई लगती थी। लेकिन आदमी का पुरा ध्यान रखती थी। चम्पालाल को टाइम पर खाना बेटे मदन का ख्याल रखना घर के सारे काम के अलावा चाय के ठेले की भी सुबह की तैयारी में हाथ बंटाती थी।

रामली समझती थी कि उसके आदमी का मन उसमें कम हे पर क्या कर सकती थी वो । जीवन इसी तरह चल रहा था। तभी गांव में एक भूचाल आया।

बस स्टेंड के आगे नदी किनारे वाले मोहल्ले के कीसना बा की बडी बेटी को उसके घरवाले ने छोड दिया। दोनो परिवार वालों में खुब झगडे हुए।

कीसना बा के दामाद का कहना था कि तुम्हारी बेटी का चालचलन ठीक नहीं हे वो घर में रखने लायक नहीं हे।

और कीसना बा का कहना था कि दामाद के मन में खोट है इसलिये बेटी को छोडना चाहता हे। पंचायत बैठी 12000 रूपये में झगडा टुटा और जोहार बाई बाप के घर वापस आ गई ।

23-24 साल की जोहार बाई औलाद तो कोई हुई नहीं थी चेहरे का नूर अभी बाकी था बदन में अभी भी कसावट थी। पर क्या करे आदमी से बनी नहीं। कीसना बा बोले भगवान की लीला बेटी घर मे ही सही कोई अच्छा सा घर मिला तो नातरे दे दूंगा

जिस दिन से जोहर बाई अपने बाप के घर वापस आई तब से ही चम्पालाल के दोस्त नाथु का एक चक्कर रोजाना कीसना बा के यहाँ जरूर लग जाता था। महीना होते ना होते कीसना बा के यहाँ चम्पालाल की सम्पन्नता के उसके अच्छे स्वभाव के और दिलफरियादी के किस्से छोडने में नाथु कामयाब हो चुका था। कीसना बा भी रस लेता था नाथु की बातों में और जोहरा बाई भी दोनो की बातें कान लगा कर सुनती रहती थी।

इधर नाथु ने चम्पालाल से ये पक्का करार कर लिया था कि जोहरा बाई से गोटी फिट कराने की जवाबदारी पुरी पुरी नाथु की है पर बदले में चम्पालाल नाथु को अगली फसल तक के लिये 7000 रूपे बिना ब्याज के देगा। क्योकि नाथु को भी अपनी जमीन छुडाना थी जो सेठ के यहाँ गिरवी रखी हई थी। चम्पालाल जानता था कि ये 7000 रूपे कभी वापस आने वाले नहीं हे पर यदि जोहरा बाई से कनेक्शन जुड जाये तो ये सौदा महंगा नही है जिन्दगी के मजे आ जायेंगे। चम्पालाल के दिमाग में जोहराबाई का बदन घुम गया।

और फिर एक दिन नाथु की सलाह पर चम्पालाल पाव भर मिठाई और नमकीन लेकर कीसना बा के घर पहुंच ही गया।

कीसना बा तो चम्पालाल को जानते ही थे। आवभगत के साथ जोहराबाई के हाथ की चाय पिलवाई । आधा घंटा बैठ कर चम्पालाल वापस आ गया। इस बिच शिकार करने वाले और शिकार होने वाले दोनो ने एक दुसरे को भांप लिया था। खास बात ये थी कि यहां शिकार कौन हो रहा था और शिकारी कौन था ये बात बडी पेचिदा थी जो अभी तो किसी को भी समझ में नहीं आना थी।

कुछ दिन तक तो एक -दो दिन छोड छोड कर और फिर लगभग रोजाना ही दौपहर का एक-दो घंटा चम्पालाल कीसनाबा के यहां बिताने लगा। बिच में कई बार कीसना बा इसी टाइम जरूरी काम से गांव में भी चले जाते थे और एक-दो घंटे बिता कर ही आते थे।

रामली बडा ताज्जुब करती कि आजकल उसका आदमी बहुत खुश रहता है घर पर मिठाई भी लाता है . पर वो परेशान भी थी कि दोपहर में नदी पर जाने के कारण चाय की दुकान पर ग्राहकी कम हो जाती थी और कमाई भी कुछ कम पडने लगी थी।

कई बार चम्पालाल गुस्सा भी करने लगा था एक दो बार तो दिन में ही दारू पीकर आ गया था और ज्यादा पी ली थी तो शाम तक चाय का ठेला भी नहीं लगा पाया। आज तक चम्पालाल ने कभी दिन में दारू नहीं पी थी।

आधी रामायण तो नदी पर आई उस मोहल्ले वालीयों ने बता दी और बाकी जब वो नदी से घर के लिये चली तो सारा नजारा जीता जागता सामने आ गया

कीसना बा के घर के कुछ दुर से ही रामली को दिखने लगा कीसनाबा के आंगने में पडी खाट पर लेटा उसका भरतार और ओसारे से बाहर आती जोहरा बाई जो थाली में कुछ लाई थी। दोनो के बिच कुछ हंसी ठिठोली होती रही फिर अचानक चम्पालाल उठ कर जोहराबाई के साथ घर के अन्दर चला गया।

रामली अनपढ जरूर थी पर औरत मर्द के बिच के अच्छे बुरे रिशते समझने के लिये दुनिया की किसी पढाई की जरूरत नहीं पडती है सो रामली का चेहरा काले से और ज्यादा काला हो गया चाल तेज हो गई ,और घर पहुचते ही रोना पीटना षुरू हो गया। रामली बेसब्री से चम्पालाल का रास्ता देखने लगी |

रोज की तरह चम्पालाल दारू चढा कर झुमता मस्त होता घर आया भुखी शेरनी की तरह रामली टुट पडी। चम्पालाल के होश फाख्ता हो गये। नशा गायब | पहले तो हंसते हुए विराध किया फिर सारे प्रमाण जब रामली ने सामने रख दिये तो वो भी खुलकर सामने आ गया।

दहाडते हुए उसने खुला एलान कर दिया ' मरद हूँ कमाता हूँ उसको रखुंगा नातरा लाउंगा। तेरे पीछे जिन्दगी बरबाद थोडे ही करूंगा। जो करना है कर ले।

रात भर घर में कलह मचती रही सुबह होते होते चम्पालाल रामली को उसकी बुढी मां के घर जो वहां से 10-15 किलोमीटर दुर था छोड आया। सम्हालो तुम्हारी बेटी को काम धाम कुछ करती नहीं खाना बनाना आता नहीं। ये कह कर पलट कर भी नहीं देखा रामली की तरफ चम्पालाल ने। बेटा मदन भी डरा डरा बाप के इस नये रूप को देखता रहा।

अब जंगल के आजाद शेर की तरह चम्पालाल घर पहुंचा | नाथु घर के आँगन में तैयार बैठा था। सबसे पहले तो पुरी बोतल बुलवाई और दोनो ने छक के पी। नाथु ने 8-10 दिन में काम पक्का हो जाने का भरोसा जताया और अपने 7000 की याद दिलाई ।

पुरी दोपहर से शाम तक चम्पालाल कीसना बा का मेहमान रहा। शाम को कीसना बा ने लोकलाज के डर से उसको रवाना किया। जोहराबाई अब तक पुरी तरह से चम्पालाल की मुरीद हो गई थी और उतावली थी उसके घर बैठने के लिये। रोजाना बाजार का नाशता पानी नगदी पैसा जान लुटाने वाला मरद मकान भी जमीन भी और क्या चाहिये एक ओरत को दुनिया में।

बाप बेटी में इशारों इशारो मे बात हुई और अगले दो चार दिन में समाज मे सुरसुरी छोड दी।

नाथु बिचवान तैयार था ही अचानक कीसना बा ने रंग पलटा चम्पालाल और नाथु के सामने उनका एक ही राग था 'में बुढा आदमी एकला जमीन जायदाद कुछ भी नी किसके भरोसे ? मेरी जिन्दगी कैसे कटे ? कुछ तो इन्तजाम करना पडेगा।

फिर पांच दस समाज के लोगों की पंचायत बैठी पीना पिलाना हुआ बीस हजार नगद कीसना बा को देना तय हुआ। अब बीस हजार की व्यवस्था तत्काल तो मुश्किल फसल आने में चार महीने की देर कीसना बा मानने को तैयार नहीं।

जोहराबाई का दिल पसीजा उसका सच्चा प्रेमी मरद जो था उसने कीसना बा को मनाया ये तय हुआ कि पांच हजार अभी बाकी चार महीने बाद। कीसना बा मान गये पर नाथु नहीं माना मजबुरन चम्पालाल ने सेठ के यहां मकान की लीखापढी कर दस हजार लिये। पांच हजार कीसना बा को और

पांच हजार नाथु को सोंप दिये। अब नाथु खुश था फोकट के पांच हजार पाके जो वो कभी भी लोटाने वाला नहीं था कीसना बा खुश था बेटी ने बेटे जैसी कमाई दी थी और अभी तो पंद्रह हजार ओर मिलेंगे। चम्पालाल खुश था इस उमर में फिर एक जवान जोरू जो मिल गई थी ओर जोहरा बाई वो तो खुश थी ही एक नया आदमी मिला जोश खरोश वाला पैसे वाला उसके नखरे उठाने वाला और उसकी हर जरूरत पुरी करने वाला। इस पुरे काण्ड से दुखी थी तो बस एक रामली।

दुनिया में अक्सर एसा होता हे कि एक आदमी खुद की खुशी के लिये ना जाने कितनों को दुखी कर देता है मगर यहाँ मामला ये था कि एक रामली के दुख की कीमत पर इतने लोग खुश हो गये थे । खैर चार आठ दिन तक तो चम्पालाल का कीसनाबा के यहाँ वेसे ही आना जाना रहा दोपहर को जाना फिर कीसनाबा को जरूरी काम से घर से बाहर निकल जाना और शाम तक आना तब तक घर पर चम्पालाल और जोहराबाई जोहराबाई और चम्पालाल बस इसके सिवा कुछ नहीं।

रामली और उसके गरीब परिवार की तरफ से कोई विरोध अभी तक चम्पालाल को नहीं मिला था|

इसी को देखते हुए इस प्रेम कहानी का अगला एपीसोड भी शीघ्र ही सामने आ गया। आठवें दिन शाम के अन्धेरे में जोहारबाई चम्पालाल के दो कमरे वाले शीशमहल मे आ गई हमेशा के लिये। कीसनाबा खुश थे बेटी का रास्ता लगा बीस हजार की कमाई हुई । लोग जरूर बातें करेंगे तो करते रहे लोग और क्या कर सकते हैं।

चम्पालाल तो मानो स्वर्ग में आ गया था कहाँ रामली और कहाँ जोहारबाई कहाँ बासी जलेबी और कहाँ ताजा गरम रस से भरी इमरती। अगले 10-15 दिन तो दोनो के ऐसे मजे में गुजरे कि रात दिन का भी होश नहीं रहा फिर कहीं जाके कुछ तृप्ती हुई तो काम धन्दे की सुझी। चम्पालाल ने वापस अपने चाय ठेले पे ध्यान देना शुरू किया| पिछले दो महीने से चल रहे जोहराबाई को फतह करने के अभियान के कारण चाय की दुकान बिलकुल ठप्प हो गई थी। एक नया ठेला और लगने लगा था बिक्री आधी हो गई थी फिर दस हजार की उधारी वाला भी रोजाना ब्याज के पैसे लेने आ जाता था।

इधर जोहराबाई बडे जतन से अपने नये घर को सजाने सवांरने में लगी थी। साफ सफाई करती नये नये सामान लाने की योजना बनाती। एक दिन दोपहर में उसे कुछ भुख लगी तो बाजार का चरपरा खाने की मन में आई और तभी उसे याद आया पिछले आठ दस दिन से चम्पालाल घर पर कुछ नाश्ता भी नहीं लाया है और तो और कई बार तो वो दोपहर में घर भी नहीं आया था।

बस फिर क्या था शाम को ही अपना रोद्र रूप दिखाया खाना बनाना तो दुर जो गुस्सा कर के बैठी की दो घण्टे में मानी। चम्पालाल रात को ही मिठाई लाया चरपरा लाया और खाने का सामान भी लाया साथ में खुद की दारू भी लाया और वो रात बढिया कटी।

दुसरे दिन चम्पालाल ने फिर एक साहुकार से दो हजार रूपे उधार लिये और जोहारबाई के लिये साडी ब्लाउज पायजेब नई चप्पलें और घर का भी कुछ सामान लेकर शाम को घर पहुंचा जोहार बाई धन्य हो गई खुब लाड लडाया मालपुए बनाये उस रात तो बहुत मजे किये ही अगला एक महीना भी अच्छा गुजरा।

रामली के गांव से एक उसका रिश्तेदार बीच मे आया था कह रहा था कि उसको वापस रख ले पर चम्पालाल ने पुरी दादागिरी से उसे भगा दिया। उसी शाम चम्पालाल जब अपने धंधे का महीने का हिसाब मिलाने बैठा तो चकरा गया कुछ समझ नहीं आ रहा था बचत कुछ नजर नहीं आ रही थी दुध

वाले के भी पैसे चढते जा रहे थे पुराना कर्जा कुछ भी नहीं चुका पा रहा था। ओर घर का खर्च ? बाप रे पिछले दिनो से दुगना होता जा रहा था। उसे पुराने दिन याद आये रामली के टाइम बहुत बरकत थी धंदे मे ना जाने क्या हो गया है आजकल। खैर पहला काम उसने ये किया कि साहुकार को रोजाना ब्याज देने से साफ मना कर दिया। इकट्ठा ब्याज फसल पर ही दुंगा। साहुकार बोला फिर ब्याज पर भी ब्याज लगेगा। चम्पालाल ने मंजुंर किया।

फसल आने में अभी दो महीने की देर थी चम्पालाल को समझ नहि आ रहा था गाडी कैसे पटरी पर लाना। आखिर उसने निर्णय लिया जोहराबाई को समझाना पडेगा कि घर का खर्चा कम करे।

रात को अपनी महारानी को खुब प्यार जताते हुए चम्पालाल ने कहा जोहार इस महिने हमें तेल घी का और बाजार का खर्चा कम करना पडेगा। दुकान में बहुत मद्धीवाडा है फसल भी कमजोर है इस साल गाडी बेलेन हो रही है। सुन कर पहले तो जोहारबाई बिफरी दुहाई देने लगी में तो कुछ भी खर्च नहीं करती। फिर अचानक कुछ सोच कर यकायक चुप हो गई ।

अगले कुछ दिन थोडे ठण्डे ठण्डे रूखे रूखे गुजरे। नोन तेल लकडी के फेर में तो बाजबहादुर भी अपनी मोहब्बत भुल जाता चम्पालाल कौन से खेत की मुली था।

अचानक एक दिन जोहराबाई बापु के घर जाने की जीद करने लगी। चम्पालाल ने भी खुशी खुशी भेज दिया कहा शाम को आ जाना। जोहराबाई दुसरे दिन का कह कर चली गई ।

उस रात चम्पालाल अकेला होने से कुछ परेशान भी रहा और खुद को कुछ आजाद भी महसुस किया रामली की भी याद आइ। चम्पालाल समझ ही नहीं पा रहा था कि वो सुखी हे या दुखी या वो पहले अच्छा था या अब अच्छा है। इसी दुविधा में रात बिताइ।

दुसरे दिन जोहार बाई आ गई । कीसनाबा भी साथ में आये थे। वो केवल याद दिलाने आये थे कि फसल आने वाली है रूप्यों की सख्त जरूरत है कब तक हो जायेंगे जल्दी इन्तजाम करो चम्पालाल ने उनकी आवभगत करी विश्वास दिलाया कि काम हो जायेगा।

अब चम्पालाल फिर दुकान में मेहनत करने लगा ताकि घर खर्च और कुछ ब्याज इतना तो दुकान मे से निकल जाये ताकि फसल आये तो कीसना बा को बाकी पंद्रह हजार चुका सके।

चम्पालाल के दिलो दिमाग से इश्क का भुत पुरी तरह निकल चुका था रात को घर आता जोहारबाई पर नजर पडती तो पंद्रह हजार पहले याद आते ना खाना अच्छा लगता ना रात को नींद आती। जोहारबाई कुछ लाड भी लडाती तो एसे लगता जैसे कोई भुतनी लिपट रही हो।

अब तो दिन में कई छोटी मोटी बातों पे झगडे भी होने लगे। हर बात पर खिंचातानी होना अब आम बात हो गइ थी। चम्पालाल फसल का रास्ता देख रहा था पंद्रह हजार चुका दुं फिर साली को सुधार दुंगा

आज का दिन चम्पालाल के लिये बडा बुरा निकला। जमीन की बटाई वाला आया था पुरा हिसाब जोड कर लाया था। फसलों में किडा लगने से दवाइयों का खर्चा ज्यादा हो गया था फसल भी कमजोर थी सब खर्चा काटते बीस हजार की कमाइ हुई चम्पालाल के हिस्से के दस हजार लेके आया था वो। जबकि चम्पालाल को पुरा भरोसा था कि तीस चालीस हजार की फसल होगी कीसना बा से पींड छुट जायेगा।

अब क्या होगा ? कीसना बा के पंद्रह हजार सेठ के दस हजार और ब्याज दोनो को

देना जरूरी है रात को ही जोहराबाई ने अल्टीमेटम दे दिया था कि मेरे बापु के पुरे पंद्रह हजार दो चार दिन में दे ही देना। क्या फिर कोई नया साहुकार ढुंढना पडेगा ?

तभी शान्तु सेठ पुराना साहुकार दस हजार मुल ओर दो हजार ब्याज कुल बारह हजार की चिट्ठी ले कर आ गया आज ही देना पडेंगे। चम्पालाल ने समझाया कि पांच हजार तो नाथु से दिलवायेगा लेकिन सेठ ने उसके कान के जाले साफ कर दिये। नाथु तो पिछले दो महीने से गांव से बाहर है खुद की फसल पेटे परबारे किसी दुसरे से पहले ही उधार ले जा चुका है नाथु से तेरे को कुछ नहीं मिलने का। चम्पालाल तो आसमान से गिरा ओर ऐसा कि नीचे टिकने को जमीन भी नहीं मिली | और मिली भी तो सामने आंखे फाडे घुरती हुइ जोहराबाई मेरे बापु के पैसे ना दिये तो देखना नासपीटे में तेरी क्या गत करूंगी। चम्पालाल भी गुस्से में था बोल पडा जो तेरे से बने वो कर लेना जब पैसे आयेंगे तब दुंगा ना , तु तो मेरी घरवाली है , तु तो समझ |

जब तक बापु के पुरे पेसे ना देगा तब तक हक मत जताना मेरे उपर तेरी गुलाम नी हूँ चार महीने से मजे ले रहा है मेरे फोकट की समझ रखी है क्या। और चिल्लाती दहाडती जोहराबाई शाम होते होते छाती माथा कुटते अपने घर जा चुकी थी। रात को कीसना बा भी आकर चेतावनी दे गये थे कि सुबह आठ बजे तक बाकी पैसे ला देना तो जोहरा आ जायेगी वरना .....समझ लेना

रातभर चम्पालाल परेशान रहा बिलकुल नींद नहीं आई । पैसों की जुगाड का कोई रास्ता ना दिखा। सोचते सोचते आँखों में आंसु जरूर आ गये और उन आंसुओं में झिलमिल करती रामली ओर मदन की तस्वीर दिखी मन में पछतावा भी शुरू हुआ।

किस्मत का कुछ खेल अभी बाकी था। दुसरे दिन सुबह तो कुछ नहीं हुआ लेकिन दोपहर में अचानक चाय के ठेले के सामने पुलीस की जीप आकर रूकी। पुलीस उतरी ओर उसे साथ ले गये। थाने जाकर पता चला कि उसने गांव की एक जवान ओरत को अपने घर में जबरदस्ती बन्द कर के रखा डरा धमका कर उसके साथ बलात्कार करता रहा ओर इसी जुर्म में पुलिस ने उसे अरेस्ट कीया है

चकराता हुआ चम्पालाल हाथ जोडे गिडगिडाता रहा साब वो तो मेरी नातरे वाली लुगाई हे मेने उसको रखी है ।

ये सब गवाह सबुत बाद में देना अभी तो वो जोहारबाई ओर उसका बाप रिर्पोट लिखवा के गये हैं थानेदार ने बडी बेरूखी से जवाब दिया।

पर साब वो पीछले चार महीने से मेरे घर में रह रही थी सारे गांव को मालुम है आप तलाश कर लो। और साब आप भी तो आते थे मेरी चाय की दुकान पर आपने भी देखा होगा ?

अरे तो साले हम आते थे तो क्या तेरे घर में झांकने आते थे ? थानेदार ने झिडका देखना सुनना अलग बात है कागज पर प्रमाण अलग बात तेरे पास कोई प्रुफ हे कि वो तेरी घरवाली हे ? हेडसाब बन्द करो साले को

चम्पालाल सकते में आ गया। दो दिन हवालात में रख के सीधा जेल भेज दिया गया धारा 376 बलात्कार गम्भीर अपराध। ओह .... एकदम चम्पालाल की विचार यात्रा रूकी हाथ की चाय वेसे की वेसी थी सामने रामसिहं हेडसाब खडा था |

क्यों बे अब पछता रहा है खुब जवानी चढी थी बेटा हो गया ढीला। हंसते हंसते हेडसाब तो चल दिया पर चम्पालाल रो पडा आंख में आंसु आ गये।

आज सात दिन हो गये जेल में रोते रोते दिन निकल रहे हैं ना तो जेल की रोटी अच्छी लगती है ना ही रात को नींद आती है घर याद आ रहा है , रामली याद आ रही हे मदन याद आ रहा है खुद की बेवकुफी पर पछताना और रोना यही कर रहा है वो रोज। जेल वाले हेडसाब बता रहे थे कि 376 में जमानत भी मुश्किल से होती हे अभी भी मोका है समझोता हो सकता हो तो कर ले वरना मर जायेगा बेमोत।

क्या करूं इसी सोच मे था कि चोंक गया उसके नाम की आवाज लगी थी उसने कान दिये जगदिश की आवाज थी ' चम्पालाल गांव बडगोंदा ...चलो मुलाकात आई है।

कौन होगा ? चम्पालाल सोचने लगा पिछले सात दिन में तीन चार खास दोस्त ही मिलने आये थे |

आज कौन होगा सोचता हुआ चम्पालाल बाहर बडे गेट की तरफ बडा और उसने गेट की जाली से जो देखा भरोसा नहीं हुआ उसकी आंखो में आंसु आने लगे। बाहर रामली और मदन दोनो खडे थे रामली के हाथों में रोटी की पोटली थी। चम्पालाल को लगा जेसे देवदूत आये है उसके दिल मे रामली के लिये छुपा हुआ प्यार और मदन के प्रति स्नेह उछाले मारने लगा।

चम्पालाल की झुकी हुई गरदन और भींगती आंखे देखकर उस देहाती अनपढ कुरूप ओरत का हाथ अपने आप बढ कर उसे सहलाने लगा | चम्पालाल रो पडा उसे लगा ये तो भगवान का हाथ है वो गेट पर रूक ना सका अन्दर आकर खुब रोया किसी के चुप कराने से भी चुप ना हुआ। जेसे तेसे शाम हुइ चम्पालाल का दिमाग एक ही बात सोच रहा था केसे मुक्ति मिलेगी इस नरक से। वो रह रह कर भगवान से माफी मांग रहा था।

अचानक गेट से फिर आवाज आई चम्पालाल बडगोंदा वाला .....मुलाकाती है ...

अब कौन है क्या रामली अभी तक यहीं बैठी है। चम्पालाल असमजंस में गेट की ओर चला।

बाहर देखा नाथु था एक क्षण तो गुस्सा आया फिर गुस्से को व्यर्थ जानकर कोतुहल से बोला क्या हुआ नाथु कहाँ था तु अभी तक ?

ताने उलाहने के बाद नाथु ने बताया कि वो जोहारबाई से मिलकर आ रहा है बहुत नाराज है वो उसको तुने चार महीने तक वापरी ओर कीसना बा को टेम पे पैसा नही दिया। अब उनकी नीयत में खोट आ गई है इसी लिये रिपोर्ट डाली है।

चम्पालाल नाथु के हाथ जोडने लगा मेरे को बचा ले यार नाथु मेरे को छुडा ले यहां से तु मेरा दोस्त हे यार।

नाथु ने तुरन्त उपाय बताया देख कीसना बा और जोहारबाई दोनो का गुस्सा बहुत तेज है दोनो पेसों के दास है तु बोले तो मैं राजीनामे की बात करूं पर अब खर्चा ज्यादा लग जायेगा। पचास हजार से कम में कीसनाबा मानने वाला नहीं है और कुछ पुलीसवालों को भी देना पडेगा कोरट मे बयान होने के पहले केस खतम हो जायेगा

पर इतने पेसे मेरे पास कहाँ हे यार तुझे तो मालुम है ?

तु सोच ले पेसे की व्यवस्था कर या फिर ये मान ले कि चार बीघा जमीन थी ही नहीं तेरे पास। जोहराबाई के नाम करदे जमीन ओर छुट्टी सब बात से। कल तक सोच ले कल में फिर आउंगा। और देख यार इतनी मेहनत कर रहा हूँ तेरे लिये मेरी दाडकी मत भुल जाना।

चम्पालाल वापस अन्दर आया वही असमंजस वही क्या करना क्या नहीं करना। किंकर्तव्यविमुढ ?

साथी कैदी पुछ रहे थे आज तो चम्पालाल की दो दो मुलाकात आई कौन कौन था ?

किसी जानकार कैदी ने चुटकी ली सुबह पहली वाली ओरत थी और अब शाम को दुसरी वाली।

रात भर चम्पालाल सोचता रहा चार बीघा जमीन बडी या घर का सुख जेल से छुटकारा रामली ओर मदन के साथ फिर सुखी जीवन ? आंखों में ओसु लिये चम्पालाल भगवान को धन्यवाद दे रहा था वो मान गया कि उसने गलती की रामली ओर मदन का दिल दुखाया तो भगवान ने उसे सजा दी अब जमीन जाती है तो जाये।

चार बीघा जमीन जाती दिखी चम्पालाल को पर तभी दिखा स्वर्गलोक जेसा वो दो कमरे का अपना घर जिसमें रामली ओर मदन दोनो उसका इन्तजार कर रहे थे वो निर्णय पर पहुंच गया उसका सारा असमंजस दुर हो गया था उसने तय किया कि नाथु को आते ही राजीनामे के लिये बोल दुंगा और ये भी तय किया कि दुसरी ओरत का चक्कर बहुत खराब होता है ओरत एक ही भली।

महेश शर्मा

जन्म -----१ दिसम्बर १९५४

शिक्षा -----विज्ञान स्नातक एवं प्राकृतिक चिकित्सक

रूचि ----लेखन पठन पाठन गायन पर्यटन

कार्य परिमाण ---- लभग ४५ लघुकथाएं 80 कहानियां २०० से अधिक गीत२०० के लगभग गज़लें कवितायेँ

लगभग ५० एवं एनी विधाओं में भी

प्रकाशन --- दो कहानी संग्रह १- हरिद्वार के हरी -२ – आखिर कब तक

एक गीत संग्रह ,, मैं गीत किसी बंजारे का ,,

दो उपन्यास १- एक सफ़र घर आँगन से कोठे तक २—अँधेरे से उजाले की और

इनके अलावा विभिन्न पत्रिकाओं जैसे हंस , साहित्य अमृत , नया ज्ञानोदय , परिकथा , परिदे वीणा , ककसाड ,

कथाबिम्ब , सोच विचार , मुक्तांचल , मधुरांचल , नूतन कहानियां , इन्द्रप्रस्थ भारती और एनी कई पत्रिकाओं में

एक सौ पचास से अधिक रचनाएं प्रकाशित

एक कहानी ,, गरम रोटी का श्री राम सभागार दिल्ली में रूबरू नाट्य संस्था द्वारा मंचन मंचन

सम्मान --- म प्र . संस्कृति विभाग से साहित्य पुरस्कार , बनारस से सोच्विछार पत्रिका द्वारा ग्राम्य कहानी

पुरस्कार , लघुकथा के लिए शब्द निष्ठा पुरस्कार ,श्री गोविन्द हिन्दी सेवा समिती द्वाराहिंदी भाषा रत्न

पुरस्कार एवं एनी कई पुरस्कार

सम्प्रति – सेवा निवृत बेंक अधिकारी , रोटरी क्लब अध्यक्ष रहते हुए सामाजिक योगदान , मंचीय काव्य पाठ